कलावसुधा

प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

ISSN-2348-3660

जुलाई–सितम्बर, 2026

Peer Reviewed

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा
सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका

अंक–53

दिव्यांग शिल्पी प्रसंग

कलावसुधा

प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

■ वर्ष : 26 ■ अंक : 53 ■ जुलाई–सितम्बर, 2026

ISSN-2348-3660

प्रकाशन स्थापना के 25 वर्ष

Peer Reviewed

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका

सलाहकार मण्डल

1. पद्मश्री डॉ. पुरू दाधीच
2. पद्मश्री राम दयाल शर्मा
3. डॉ. श्याम सुन्दर दुबे
4. पद्मश्री प्रो. ऋत्विक सान्याल
5. पद्मश्री रामचन्द्र पुलावर
6. प्रो. सुरेन्द्र दुबे
7. प्रो. राधेश्याम जायसवाल
8. प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास
9. प्रो. कुमकुम धर

समीक्षा मण्डल

1. प्रो. के. शशी कुमार
2. प्रो. संगीता पण्डित
3. प्रो. राजेश शाह
4. प्रो. उषा सिन्हा
5. प्रो. अनिल बिहारी ब्योहार
6. श्रीमती मन्जरी सिन्हा
7. डॉ. दीक्षा नागर
8. शशांक दुबे
9. कुमार अनुपम
10. डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

सम्पादकीय मण्डल

1. डॉ. चेतना ज्योतिष ब्योहार
2. प्रो. ऋचा नागर
3. डॉ. अरविन्द कुमार
4. डॉ. वीरेन्द्र निर्झर
5. भारत रत्न भार्गव
6. डॉ. गौतम चटर्जी
7. प्रो. डॉ. चन्द्रशेखर कणसे
8. प्रो. डॉ. सुबाष चन्द्र सिंह कुशवाहा
9. डॉ. अपूर्वा अवस्थी
10. डॉ. जय शंकर राय

प्रधान सम्पादक	सम्पादक	सह–सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय	डॉ. उषा बनर्जी	डॉ. ज्योति सिंह

सम्पादकीय ठिकाना :

कला वसुधा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग, लखनऊ – 226029

R.N.I. No. : UPHIN/2001/6035

ISSN-2348-3660

वेबसाइट : https://www.kalavasudha.com

ई–मेल : kalavasudha01@gmail.com

मो. : 8052557608 (प्रधान संपादक)

मो. : 9889835202 (संपादक)

मो. : 8009800436 (सह–संपादक)

''कला वसुधा का वेब अंक आप **Not Nul (https://www.notnul.com)** पर पढ़ सकते हैं।''

कलावसुधा
प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका
■ वर्ष : 26 ■ अंक : 53 ■ जुलाई–सितम्बर, 2026
ISSN-2348-3660
Peer Reviewed
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका

सिलसिला.....

दिव्यांग शिल्पी प्रसंग

	कहना–सुनना		4
1.	चेतना की दिव्यता का बोध	–प्रो. (डॉ.) श्याम सुंदर दुबे	7
2.	दिव्यांग कलाकारों की साहसिक दुनिया	–प्रो. (डॉ.) सुबाष चन्द सिंह कुशवाहा	10
3.	'भावरंग' की दिव्य दृष्टि और सहज सृष्टि	–प्रो. (डॉ.) स्वरवन्दना शर्मा	17
4.	संगीत के अनगढ़ हीरा प्रज्ञा चक्षु भदावर राज्य अटेर (भिण्ड)	–डॉ. बीरेंद्र कुमार चन्द्रसखी	22
5.	मन की आँखों के द्रष्टा फिल्म संगीत निर्देशक : रवीन्द्र जैन	–प्रो. (डॉ.) लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'	23
6.	कोई जब राह न पाए, मेरे संग आए	–शशांक दुबे	28
7.	दृष्टि के अभाव से दृष्य का आलोक (नाट्यकुलम के कुलगुरु आचार्य भारत रत्न भार्गव द्वारा लिया)	–राजीव मिश्रा	33
8.	अनिल बिहारी ब्योहार : मेरी दृष्टि में	–प्रो. (डॉ.) चेतना ज्योतषी ब्योहार	38
9.	मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।	–डॉ. रूपा आर्या	40
10.	मानव शरीर : एक उत्तम तंत्र या दिव्यांग : (ऑटिज्म, हस्त मुद्राएँ एवं समावेशी शिक्षण)	–रजनी राव	43
11.	अभिशाप नहीं, चुनौती है दिव्यांगता अथवा विकलांगता	–डा. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'	47
12.	व्हाट्सएप पर आवाज कुछ समय लेकर पहुंचती है :	–बालकीर्ति	51
13.	ख्याल संगीत में वैदिक वाङ्मय का पुनर्संस्कार पं. बलवन्तराय भट्ट 'भावरंग' की बंदिशों द्वारा विश्लेषण	–अलंकृता भट्ट	54
14.	चौपाल रविंद्र जैन का आना एक इतिहास का दर्ज हो जाना	–निर्मला ढोसी	61
15.	मौन अंधेरे का मुखर स्वर : दिवाकर शर्मा	–चन्द्र मोहन	63
16.	ग्वालियर घराने की संगीत परम्परा और पंडित बलवंत राय भट्ट 'भावरंग'	–डा. अंकित दुबे	64
17.	सुधा चंद्रन : अदम्य इच्छाशक्ति, कला और पुनर्जन्म की अमर गाथा	–आरव मिश्रा	68
18.	संघर्ष से सफलता तक : दिव्यांगता, शिक्षा एवं पारिवारिक सहयोग का प्रेरक अध्ययन–उत्तम मारू का जीवन	–प्रो. डा. सृष्टि माथुर	70
19.	मेरे लिए नृत्य प्रेम आनन्द और आत्म अभिव्यक्ति का माध्यम है–अमित राय	–अशोक बनर्जी 'शाखा'	72
20.	सूरदास से रवीन्द्र जैन तक दृष्टिबाधिता, रचनात्मकता, भक्ति–संवेदना एवं सांस्कृतिक योगदान का दिव्यांग– विमर्शपरक तुलनात्मक अध्ययन	–मंगल सिंह वर्मा	75
21.	शिक्षा मेरा हक है, विकलांगता बहाना नहीं	–अनवारुल हसन	78
22.	डा. मीता लाल राठौर व्यक्तित्व व कृतित्व	–आभा सक्सेना	79
23.	संस्मरण शास्त्रीयता बनाम मानवता आत्मसंवाद	–श्रद्धा निगम	81
24.	गायन में ही मुझे आगे बढ़ना है : गोपाल पासवान	–गोपाल जी राय	82
25.	जज्बे का तूफान : डा. सुनीता तिवारी	–डा. मंजरी पाण्डेय	83
26.	योगः कर्मसुकौशलम् एवं संतोष धन से धनी, संस्कृत विद्वान एवं संगीत शास्त्र के गुनी डा. विजय कुमार जैन	–प्रो. (डॉ.) उषा बनर्जी	84
27.	विलक्षण कलाकार –रवींद्र जैन	–प्रो. (डॉ.) प्रकाश चन्द्र गिरि	87
28.	दिव्यांग गुरुदेव के चरणों में एक प्रणाम	–डॉ सत्य प्रकाश	89
29.	भारतीय संगीत के पुनर्जागरण में पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी का योगदान	–डा. सारिका श्रीवास्तव	91
30.	संगीत शिक्षिका श्रीमती रितु कारिधाल	–डा जयशंकर	94

31.	पंजाब के अनन्य संगीत साधक–पंडित ओम प्रकाश थापर	**–डा. देवेन्द्र वर्मा 'ब्रजरंग'**	98
32.	दिव्यांग विमर्श के परिप्रेक्ष्य में भारतीय एवं विश्व रंगमंच के नाटकों का विश्लेषण	**–प्रो. (डॉ.) हर्षबाला शर्मा**	102
33.	अनन्त की आँखें : अन्तर्कथा	**–भारत रत्न भार्गव**	108
34.	Bharatanatyam Training as a Therapeutic Medium for Empowerment in Children with Autism Spectrum Disorder and Down Syndrome: A Workshop - Based Field Study	**–Amit Rai**	116
35.	DR RAJA BHAU SONTAKKE The Man with a Great sight	**–Dr Prakash Sontakke**	121
36.	MY DISCIPLE UPASANA, -	**–Dr. Keya Chanda**	125
37.	Amanullah "Amani": From Folk Music to Qawwali	**–Waheedullah Saghar**	126
समीक्षा			
38.	Review of a Book on the Spiritual and Philosophical Dimensions of Indian Classical Music	**–Neha Pandey**	135
39.	"प. राधेश्याम कथावाचक के सृजन में सम्वाद–सम्प्रेषण"	**–आरती**	137
भूल सुधार			
40.	भारतीय संगीत का मुकुटमणि 'राग'	**–डा. स्वरवन्दना शर्मा**	139
41.	''गायनाचार्य पण्डित नारायण राव व्यास स्मृति ग्रंथ'' में प्रकाशित अप्रचलित राग की बंदिश	**–प्रो. (डा.) सुनीरा कासलीवाल**	141
42.	**प्रतिक्रिया**		146

1. वीरेन्द्र कुमार चन्द्रसखी
2. डाक्टर गौतम चाटुजेय
3. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित
4. सोनाली चक्रवर्ती
5. श्याम सुन्दर पाण्डेय
6. हरिशंकर शर्मा
7. भंवर लाल श्रीवास्तव
8. राजेन्द्र रंजन

प्रधान सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय

सम्पादक
प्रो.(डॉ.) उषा बनर्जी

सह–सम्पादक
डॉ. ज्योति सिंह

शब्दांकन :
सियाराम शुक्ला
मो. : 9565751554

विधि परामर्शी
रमेश चन्द्र पाण्डेय
अजीत श्रीवास्तव

आवरण चित्र
चेतन औदिच्य
49–सी, जनता मार्ग,
सूरजपोल अंदर उदयपुर–313001
राजस्थान
मो. : 9602015389

व्यवस्था सहयोगी
देवाशीष,
पर्ण शिशिर,
ऋचा,
हरीपाल
राहुल

संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली द्वारा आंशिक आर्थिक सहयोग प्राप्त

सर्वाधिकार सुरक्षित
पत्रिका के किसी भी अंश का मंचन प्रकाशन अथवा प्रसारण करने से पूर्व सम्पादक की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

पत्रिका से जुड़े सभी व्यक्ति कला सेवा हेतु अवैतनिक एवं अव्यवसायिक हैं।

न्याय क्षेत्र लखनऊ

इस अंक का मूल्य 200/–

सम्पादकीय ठिकाना : कला वसुधा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग, लखनऊ – 226029
वेबसाइट : **www.kalavasudha.com** ई–मेल : **kalavasudha01@gmail.com**
मो. : 8052557608, 9889835202

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक डॉ. उषा बनर्जी द्वारा मुद्रक : प्रिन्टआर्ट ऑफसेट, 33 कैण्ट रोड, लखनऊ RNI - Regd. PRESS/2024/624/00002209
मो. : 9839011924 से मुद्रित तथा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग लखनऊ – 226029 से प्रकाशित।

प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे 'कला वसुधा' और सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

कहना–सुनना

सभी सुधी एवं सहृदय गुनीजनों को सादर स्निग्ध अभिवादन।

बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना।
कर बिनु कर्म करइ बिधि नाना।।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी।।

बचपन में विभावना अलंकार का यह उदाहरण हम बड़े चाव से याद करते थे और सोचते थे कि वो निराकार ब्रह्म बिना आवश्यक अंगों के भी वो सभी कर्म कर सकता है जो इस चराचर जगत में बिना अंग के करना असम्भव सा लगता है। हम सभी तो सामान्य जन हैं। ईश्वर ने हमारे विभिन्न अंगों के माध्यम से ही जीवन के सभी कर्म जैसे सुनना, देखना, चलना खाना–पीना, पढ़ना–लिखना और अनंत काम करने का सहज विधान किया है और यदि इन अंगों में से किसी की न्यूनता हो तो.....। जीवन जीना ही दूभर हो जाता है। किन्तु हम सभी तो उसी परम शक्ति के ही अंश है न.....। यदि कोई अंग नहीं है तो हम उस ईश्वर की प्रेरणा, गुरूजनों के मार्गदर्शन तथा आत्मीय जनों के सहयोग से अपने उस अंग के अभाव से उपजी विवशता को अपने जीवन के उद्देश्य पूर्ति के आड़े नहीं आने देते और लग जाते हैं तन, मन, प्राण से उस अभाव की विवशता को नकारने और करने लगते हैं हम अपने ही अंदर छुपी ईश्वर प्रदत्त सभी विशेषताओं को उभारने, निकल पड़ते हैं अपने ही अन्दर छुपी उस दिव्य शक्ति को नये पंख देने जिस पर हमने शायद कभी ध्यान ही नहीं दिया था। वो कहते हैं न आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है। जब हमारे ये भौतिक अंग किसी कारण से साथ नहीं देते तो हमारी अन्य इंद्रियों की संवेदनशीलता और अधिक सक्रिय होकर सहयोग करने लगती है। यहीं से शुरू होता है इस ओर विशेष प्रयाण और एक कर्मठ और दृढ़ निश्चयी अनुसंधान तभी हम सामान्य से दिव्यता की यात्रा पर निकल पड़ते हैं।

हमारे समाज में न जाने कितने ही कर्मठ और दृढ़ निश्चयी कलाकार हैं जिन्होंने अपने आवश्यक अंगों के न होने से हताश होकर हारना न स्वीकार कर उस ईश्वर द्वारा प्रदत्त दिव्य शक्ति का अनुभव अपने अद्वितीय प्रयास से किया जिससे ही वे दिव्यांग जन कहलाये। उन्होंने ईश्वर द्वारा प्रदत्त उस दिव्य शक्ति को अपने प्रयासों से अनुभव किया और अपनी मेहनत तथा लगन से अपने छिन्न भिन्न अंगों की न्यूनता को नकार कर विकलांग से दिव्यांग बने और अपने लक्ष्य को हासिल किया। ऐसे लोग सच पूछो तो अपने जीवन में चारों ओर से एक साथ लड़ रहे होते हैं। प्रथम अपने अंग की न्यूनता को सही दिशा देकर सफल व्यक्तित्व बनाने की ओर। दूसरा–अपने कार्यक्षेत्र की अनंत चुनौतियों से वे एक नये ही ढंग से दो चार होकर सफलता की ओर बढ़ रहे होते हैं।

तृतीय–इस सामाजिक दृष्टि और उसकी अनेकों वर्जनाओं से वे अपने ढंग से लड़ रहे होते हैं।

चौथे–वे अपने लिये हमेशा एक स्नेहिल तथा निःस्वार्थ सहयोग की कामना में अनेकों बार हारकर न बैठने की लड़ाई भी लड़ रहे होते हैं। कठिन है, बहुत कठिन है यह लड़ाई सामान्य जनों के लिये, तो सोचो यह सब इनके लिये कितना कठिन होता है जो कहीं न कहीं, किसी न किसी क्षण किसी न किसी के सहारे की अपेक्षा तो करते ही हैं और इसी लड़ाई से लड़ते–लड़ते मैंने अक्सर कई दिव्यांगों को अपना हर कार्य खुद से करते हुए देखा है। कभी–कभी जवाने की कटुतायें उन्हें चिड़चिड़ा भी बना देती हैं फिर भी वे अपने को संयमित करके सभी मुश्किलों का खुद सामना करके किसी के भी समक्ष अपने को कमतर नहीं होने देते। यही उनकी खासियत है। वे अपने में निहित दिव्य शक्तियों को कुछ इस तरह से ढूढ़ते–ढूढ़ते पा जाते हैं कि उनका जीवन ही एक दिव्य दिशा की ओर एक ईश्वरीय प्रयाण बन जाता है।

जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।
मैं बपुरा बूड़न डरा रहा किनारे बैठ।।

ये दिव्य यात्रा के यात्री डूबने के डर से किनारे नहीं बैठे रहते हैं बल्कि मन के हारे हार है तो मन के जीते जीत का मंत्र लेकर अपना कार्य करते हैं निरंतर करते हैं और अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को झोंक कर करते हैं। तभी उनको सफलता मिलती है। तभी वे सामान्य जनों से भी कहीं अधिक आदरणीय हो जाते हैं और हों भी क्यों न उनकी यात्रा अन्य लोगों की यात्रा से कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण जो होती है। इसलिये वे दिव्यंग हैं। हमारे इस अंक में कयी विद्वानों ने इनके इस न्यूनांग या विकलांग से दिव्यांग बनने की यात्रा पर प्रकाश डाला है। यह सुन्दर अभिधान उन्हें कोई दयापूर्ण उपहार में नहीं मिला है न ही किसी अन्य की महानता का परिणाम है बल्कि यह इनका अपना कमाया हुआ धन है। ऐसे लोग चूँकि ईश्वर की दिव्य शक्तियों के सर्वाधिक निकट होते हैं इसलिये वे इस अभिधान के अधिकारी भी हैं।